



नक्श साहब का जन्म 24 फरवरी, 1928 को लायलपुर (अब पाकिस्तान का फैसलाबाद) में हुआ। उनके वालिद मोहतरम जगन्नाथ ने उनका नाम जसवंत राय तजवीज किया। शायर बनने के बाद उन्होंने अपना नाम तब्दील किया। अब उनके अशआर इस कदर दिलों पर नक्श हो चुके हैं कि ज़माना उन्हें नक्श लायलपुरी के नाम से जानता है। नक्श लायलपुरी 1947 में जब बेवतन हुए तो लायलपुर से पैदल चलकर हिंदुस्तान आये और लखनऊ को अपना आशियाना बनाया। पान खाने और मुस्कुराने की आदत उनको यहीं से मिली। उनकी शख्सियत में वही नफ़ासत और तहजीब है जो लखनऊ वालों में होती है। लखनऊ की अदा और तबस्सुम उनकी इल्मी और फिल्मी शायरी में मौजूद है।

नक्श लायलपुरी 1951 में रोज़गार की तलाश में मुंबई आये और यहीं के होकर रह गये। लाहौर में तरक्कीपसंद तहरीक का जो जज़्बा पैदा हुआ था, उसे मुंबई में एक माहौल मिला। सिने जगत ने उन्हें दौलत, शोहरत और इज़्जत दी। यहाँ की चमक-दमक और रंगीनियों के बावजूद उन्होंने हमेशा अपनी सादगी और सरलता को महफूज़ रखा। फ़िल्मों में उनके कुछ लोकप्रिय गीत इस प्रकार हैं-रस्मे-उल्फ़त को निभाएँ तो निभाएँ कैसे, मैं तो हर मोड़ पर तुझको दूंगा सदा, यह मुलाकात इक बहाना है, उल्फ़त में ज़माने की हर रस्म को ठुकराओ, माना तेरी नज़र में तेरा प्यार हम नहीं, तुम्हें देखती हूँ तो लगता है ऐसे, तुम्हें हो न हो पर मुझे तो यकी है, कई सदियों से - कई जनमों से - तेरे प्यार को तरसे मेरा मन, न जाने क्या हुआ-जो तूने छू लिया-खिला गुलाब की तरह मेरा बदन, चांदनी रात में इक बार तुझे देखा है। 'रेल दर्पण' की इस महफिल में हम शानदार शायर श्री नक्श लायलपुरी जी का हार्दिक स्वागत एवं अभिवादन करते हैं।

प्रधान सम्पादक

विशेष अतिथि रचनाकार

श्री नक्श लायलपुरी की गज़लें और गीत

लोग जी जान से बेज़ार कहाँ थे पहले ?
जुर्म का राज हुआ, ये सितम आज हुआ,
देश में इतने गुनाहगार कहाँ थे पहले ?

भाई है भाई का दुश्मन, ये क्या तमाशा है ?
आज हर कान्धे पे इन्सानियत का लाशा है,
जितनी आबादी बढ़ी, उतनी बर्बादी बढ़ी,
हर तरफ मौत के बाज़ार कहाँ थे पहले ?

कहीं पे कत्लो खूँ, वहशत, जुनून, बदकारी,
कहीं पे मुफ़लिसी, बेकारी, भूख, लाचारी,
कोई जीने से डरे, कोई फाकों से मरे,
मगर इस तरह के आज़ार कहाँ थे पहले ?

देश के नौजवां गुमराह नज़र आते हैं,
ये क्यूँ गुनाह की दलदल में धँसे जाते हैं ?
इनको समझाये कोई, राह पर लाये कोई,
ये बुराई के तरफ़दार कहाँ थे पहले ?
लोग जी जान से बेज़ार कहाँ थे पहले ?

हम से तो अजनबी है, तेरे शहर की हवा।
फिर किसको दूँदती है, तेरे शहर की हवा ?

सौ बार इस तरफ़ से हुआ है मेरा गुज़र,
फिर भी नई-नई है, तेरे शहर की हवा।

दीवाना लेके साथ ना चल दे इसे कहीं,
किससे उलझ रही है, तेरे शहर की हवा ?

कदमों को नागवार था, तनहाई का सफ़र,
हम राह चल पड़ी है, तेरे शहर की हवा।

आवारगी-ए-शौक का, पहने हुए लिबास,
रातों को जागती है, तेरे शहर की हवा।

रुखसत हुआ मैं तुझसे, तो साथ आई दूर तक,
संजीदा हो गई है, तेरे शहर की हवा।

इसकी अना भी छूने लगी आसमान को,
क्या 'नक्श' को लगी है, तेरे शहर की हवा।

दीवाना उठा ले, तो बन जाये खता पत्थर, फ़नकार के हाथों से बनता है खुदा पत्थर।

टूटे हुए शीशों से फिर आज सदा आई, इन्सान के माथे पर एक और लगा पत्थर।

वहशत ने इसे खूँ में नहला ही दिया आखिर, सजदे भी हुए इसको पूजा भी गया पत्थर।
कुछ अहले सियासत की आँखों के इशारों पर, खंजर से लड़ा खंजर, पत्थर से लड़ा पत्थर।

दानिशता कोई ठोकर खाने का इरादा है, मिल जायेगा राहों में फिर कोई नया पत्थर।

सब शेखो-ब्रहमन हैं, इन्सान नहीं कोई, ऐ 'नक्श' हटे कैसे ज़ेहनों पे पड़ा पत्थर ?

नक्श लायलपुरी

बी-401, वैभव पैलेस, ओशिवरा,

न्यू लिंक रोड, जोगेश्वरी (पश्चिम), मुंबई-400 102

वैचारिक आमंत्रण

आपके भीतर छिपा हुआ है एक अनूठा रचनाकार, उसे उजागर करने का सपना हम करते हैं साकार,
आप हमें भेजिये विचार, हम देंगे आपको आकार, 'रेल दर्पण' है, वैचारिक संगम का सार्थक आधार !

'रेल दर्पण' का अगला अंक जुलाई, 2014 में प्रकाशित होगा। इस अंक में प्रकाशनार्थ अपनी मौलिक रचनाएँ आप मौलिकता के प्रमाणपत्र सहित सुवाच्य स्वरूप में हमें 15 मई, 2014 तक या इससे पहले अग्रिम पते पर डाक के ज़रिये भेज सकते हैं, या फिर इसी अवधि में हमारे ई-मेल पते chiefeditor.raildarpan@gmail.com पर हिंदी रचनाएँ PDF फॉर्मेट में तथा अंग्रेज़ी रचनाएँ Word Document में मेल कर सकते हैं। डाक के ज़रिये रचनाओं के प्रेषण के लिए हमारा पता है:-

प्रधान सम्पादक

'रेल दर्पण' पत्रिका, मुख्य जनसम्पर्क कार्यालय, पश्चिम रेलवे, तीसरी मंजिल, स्टेशन भवन, चर्चगेट, मुंबई - 400 020.

www.wr.indianrailways.gov.in